

1. **प्रयोगशाला-विधि** को एक मुख्य विशेषता नियंत्रण है। इस विधि में सबसे पहले अध्ययन परिस्थिति को नियंत्रित कर लिया जाता है। इसका अर्थ यह है कि अध्ययन विषय पर प्रभाव डालने वाली सभी स्वतंत्र चरों के प्रभावों को रोक दिया जाता है।
 2. इस विधि में परिचालन की विशेषता पायी जाती है। अध्ययन परिस्थिति पूर्णतः नियंत्रण होती है। इसलिए प्रयोगकर्ता अपनी इच्छा से किसी स्वतंत्र चर को परिचालन करने में सफल होता है।
 3. प्रयोग विधि में अध्ययन स्वतंत्र चर से आश्रित चर की ओर होता है। इससे शब्दों में यहाँ प्रयोगकर्ता काण्ड से अर्थ की ओर बढ़ता है।
 4. इस विधि में किसी परिष्कारना की जाँच का प्रयास किया जाता है। प्रयोगकर्ता पहले एक परिष्कारना बनाता है और फिर अध्ययन द्वारा उसको जाँच करता है। परिष्कारना याले स्वीकृत या अस्वीकृत हो सकता है।
- प्रयोग विधि के विभिन्न चरण (Steps):-** प्रयोग विधि के विभिन्न चरण निम्न हैं -

1. **किसी समस्या का उद्घाटन करना:-** जबतक कोई समस्या स्पष्ट रूप से उद्घाटन नहीं होगी तबतक प्रयोग विधि शुरू नहीं हो सकती है। प्रयोग विधि का यह प्रथम चरण है।

2. **उपकल्पना का निर्माण:-** समस्या से स्पष्ट होने के पश्चात एक उपकल्पना बनायी जाती है।

3. **स्वतंत्र तथा आश्रित चरों को अलग-2 करना:-** उपकल्पना में दो प्रकार के चर होते हैं - आश्रित चर

① आर्ष्य चर तथा ⑩ पारिवर्तकशील चर। इन दोनों चरों को आर्का-2 कर लिखा जाता है।

4. परिदृश्यों का निपटणः प्रयोग में सही निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए अनावश्यक परिदृश्यों का निपटण किया जाता है। इस स्थिति में डेक्क उपकरणों के अकार्ड एकीकृत किये गये काल के प्रभाव को ही एकीकृत 22वां जाता है।

5. प्रयोग द्वारा प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण:- इसके लिए सांख्यिकीय दृष्टि की भी सहायता ली जाती है। इस विश्लेषण के ही आधारे पर सामान्य निष्कर्ष प्राप्त किये जाते हैं।

6. उपकरणों की जांच:- इस आँकड़ों के प्रयोग द्वारा प्राप्त निष्कर्ष की पुष्टि निर्यात उपकरणों से की जाती है। यह पुष्टि उपकरणों की जांच के लिए की जाती है। यदि प्रयोग द्वारा प्राप्त निष्कर्ष तथा पूर्व निर्यात उपकरणों एक ही होते हैं तो उपकरणों को ही एकीकृत मान लिया जाता है। इससे भ्रम होने पर उपकरणों को जाकर मानना चाहिए तथा छोड़ देना चाहिए।